REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2023

साठोत्तरी हिंदी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में परिवर्तित सामाजिक मूल्यबोध

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.
श्री वी. एम. महेता म्युनि. आर्टस एवं कॉमर्स कॉलेज
जामनगर (गुजरात)

हिंदी शब्द सागर में समाज को इस प्रकार परिभाषित किया गया है – समूह, संघ, गिरोह, दल, सभा एक ही स्थान पर रहने वाले अथवा एक ही प्रकार के व्यवसाय आदि करने वाले वे लोग जो मिलकर अपना एक अलग समुह बनाते है। वह संस्था जो बहुत से लोगों ने मिलकर किसी विशिष्ट उददेश की पुर्ती के लिए स्थापित की हो सभा जैसे संगीत साहित्य समाज। संघटन, सभा, समुह है जिसमे मानव से जुडे बहुत सारे रीश्ते और विशिष्ट उददेश होता है। समाज का अस्तीत्व हमेशा किसी सामाजिक संरचना के रुप में ही पाया जाता है। व्यक्ति समाज का महत्वपुर्ण अगं है। मार्क्स ने लिखा है की, व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, जिसका जीवन के रुप में चाहे पुष्ट न हो, फिर भी वह सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति और पुष्टी ही है।

सामाजिक उपन्यासों में सामाजिकता के गठण, समाजव्यवस्था, सामाजिक समस्याओं के पारस्पारिक घात प्रतिघात एवं सामाजिक मूल्यों का चित्रण होता है। सामाजिक उपन्यासों की कथा किसी व्यक्ति मात्र की न होकर किसी समूह, परीवार, समाज अथवा देश की होती है, तथा पत्र केवळ व्यक्ति के रुप में अभिव्यक्त न होकर समाज के किसी–न–किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। साठोत्तर काल में प्रमुख रुप से परिस्थितियों इतनी क्षिप्रता से बदली की भारतीय समाज और जीवन में मुल्यों का संक्रमण और विघटन बडी तेजी से हुआ। पुराने के टटूने और नये के बनाने के बिच भारतीय समाज और जीवन में मूल्यों का संक्रमण और विघटन बडी तेजी से हुआ है। पुराने के टूटने और नये के बनने के बीच असंतुलन, असंगतियाँ विकृतियाँ और विरोधाभास उत्पन्न हुए जिससे समाज में विघटन की स्थिती उत्पन्न हुई।

साहित्य समाज का परू क हाते ा है। साहित्य में उपन्यास एक विधा है, उपन्यास सामाजिक समस्याओं का विश्लेषण करता है, इस विश्लेषण में उसकी दृष्टि तार्किक होती है, अतः वह समाज के जड मूल्यों से उत्पीडन वर्ग का पक्ष लेता है। और इस समाज को एक चुनौती भी देता है। जड मूल्य समाज के विकास को अवरुद्ध करते है। भारतीय समाज में मूल्य परिवतर्न की प्रक्रिया स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही प्रारंभ हो गई थी। किंतू स्वातंत्र्योत्तर काल में – युगीन मूल्य संक्रमन एक व्यापक प्रलय की भाँती अखिल सदशुभ और शुचित्य को अपने सत्यानाशी आंचल में आयत्र कर लहराने लगा और उसकी लहरों में अवश नागरीक सत्ता अपनी उपाहासात्मक स्थिति को ही सत्य मानती रही।

स्वातंत्र्योत्तर काल में भारतीय समाज में व्यक्ति, परिवारधर्म, राजनीति, समाज आदि सभी स्तरो पर व्यापक रुप से मुल्य संक्रमन हुआ नैतिक मूल्यों की समस्या और भी विकट इसलिए हो गई की, प्राचीन शास्त्रीय धार्मिक अथवा ईश्वर संभूत धामिर्कता इस युग में क्रमशः क्षीण होती जा रही है। और नैतीकता के आधार पर

एक मानव संभूत निती में खोजा जा रहा है, जो दायीत्व अब तक ईश्वर या धर्म पर था वह अब मानव ने स्वंय ओढ लिया है।

स्वातंत्र्योत्तर युग में मूल्य संक्रमण की स्थिती दुहरी रही है। एक तो परंपरागत रुढीयों के विरोध में दुसरे पाश्चात्य संस्कृति के व्यापकप्रभाव से हिंदी उपन्यास ने भारतीय समाज के इस व्यापक मूल्य संक्रमण का चित्रण पुर्ण निष्ठा से यथार्थवादी दृष्टि से किया है। आज के जीवन के भाव सत्य को अपनी समग्रता में सभि स्थरों और आयामों में व्यापकता और गहनता के दोनों क्षेत्रों में अभिव्यक्त करने के लिए आज का उपन्यास प्रयत्नशिल है।

महिला लेखिकाओं ने भारतीय जन–जीवन को बहुत पास से देखा है, उसे परखा है। उसे भोगा है। तथा उसका यथा तथ्य साहित्य में वर्णन किया है। लेकिन कही–कही आज भी संयुक्त परिवार है। एकाकी परिवार फैलते जा रहे है। महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में पारिवारिक जीवन एवं उसकी समस्याओं का चित्रांकन किया है। साथ ही परिवार के माध्यम से बदलते तत्कालिन सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। प्राचीन काल में संयुक्त परिवार में सभी की इच्छाओं को महत्व दिया जाता था। हर एक सदस्य की आवश्यकताओं की पुर्ति की जाती थी किंतु ''स्वामी'' उपन्यास में लेखिका मन्नू भंडारी ने दिखाया है की, घनशाम घर का बडा पुत्र है फिर भी उसकी माँ छोटा पुत्र की सुखसुविधाओं का पुरा ध्यान रखती है तथा बडे पुत्र घनशाम के प्रती उस संयुक्त परीवार के सभी सदस्य उपेक्षा का व्यवहार करते है। वह ज्वर में तडप रहा होता है, कोई उसके तरफ ध्यान नहीं देता है। तब उसके पत्नी मिनी कहती है रात दिन वह आदमी उस घर के लिए खटकता है। अपनी कमाई का पैसा – पैसा तक जो अपनी माँ को सौंप देता है। अपने उपर जो चार पैसा भी खर्च नहीं करता उसी निरिह व्यक्ति की ऐसी उपेक्षा, ऐसी स्थितिओं के कारण संयुक्त परीवार टूटता चला गया। सदियों से साँस बहु के संबंधो का उल्लेख हुआ है कही बहुत मधुर, कही बहुत तिक्त। वैसे तो प्रत्येक साँस कमी लालसा होती है की वह अपनी बहु को बहुत–बहुत प्यार दे उसे स्नेह दुलार से भिगो दे वैसे ही हर बहु अपने साँस में ही अपनी प्यारी माँ की रुपाकृति देखती है। आज न तो साँस ही इतनी सहिष्णु रही न बहु रही अपनी साँस के प्रति उतना आदर रहा। फिर भी आज भी बहतु अच्छि साँस है तथा अति शालिन बेटी स्वरुपा बहु है उपन्यास लेखिकाओं ने इनका अति सुंदर वणर्न किया है। ''गोपी'' उपन्यास की नायीका अनुपमा के प्रति साँस का व्यवहार बडा ही मधुर है। वह जब अपनी साँस से ''नीता'' दीदी के विवाह में संम्मिलित हाने की अनुमती माँगती हुई मात्र इतना कहती है – मांजी मैं – में कुछ दिनों के लिए घर होआऊ तब प्रथम तो उसकी साँस उससे यह प्रश्न करती है क्युं बेटे ! माँ बाबुजी सब लोगों ठीक है ना, जब अनुपमा स्वीकृति दे देती है। अनुपमा साँस के इस व्यवहार से अभिभूत हो जाती है। उठती है और कह उठती है – छोटा देवर नकुल अगले हप्ते ही अमेरिका जाने को था, मंझली देवरानी के पुरे दिन चल रहे थे, बडी ननंद अपने लडकों के साथ घर–वर की तलाश में आयी हुई थी मेरे अपने सौरभ सौमित्र की परीक्षायें सर पर थी, पर माँजी ने किसी बात का उल्लेख नहीं किया। सब जन्म जन्मांतर के लिए वही पति पाने के लिए हिंदु शास्त्र में बासों व्रत है। साँस के लिए ऐसा कोई वृत्त न हुआ नहीं तो मैं जरुर करती।

दांपत्य जीवन, पारिवारिक जीवन का मूलाधार है। आज के संदर्भ में दांपत्य जीवन के मायनें ही बदल गये है। मन्नू भंडारी की उपन्यास, ''आपका बंटी'' में अजय और शुकन के टुटते बिखरते दांपत्य को दिखया है। अजय में अधिकार की स्वामित्व की भावना है जिसे शकुन की आधुनिक नारी का दर्प झेल नहीं पाता है। उस तरह मृदुला गर्ग कृत 'उसके हिस्से की धूप, उपन्यास में दांपत्य जीवन में उभर आयी प्रतिक्षा ही पारिवारिक संबंधों को बिखर देती है। इस उपन्यास में दांपत्य जीवन के विघटन का मुख्य कारण पति की व्यस्तता ही होती है। उस तरह कुसूम अंसल के उपन्यास 'अपनी – अपनी यात्रा' में शिव और मंजरी का दांपत्य जीवन भी सुखमय नहीं है, क्योंकी दोनों का व्यवहार एक दुसरे से विपरीत चलता है। सुरेखा के शब्दों में चंबुक के ध्रुवों सा विपरित यह बहुत भारतीय है। मंजरी पश्चिम रंग में रंगी है, बडी जबरदस्त आधुनिकता है। विलायती कपडे पहनती है और एक के बाद सिगरेटकृकृ महिला लेखिकाओं ने दांपत्य जीवन को बडे ही बारिक अंदाज में अपने पात्रों के माध्यम से प्रकट किया है। स्वयं महिला हाने के कारण इन लेखिकाओ ने महिलाओं की भावनाओं को अति सूक्ष्म रुप में अंकित किया है।

आज के युग में नारी पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर सभी मार्ग पर साथ चल रहे हैं। आज की नारी को किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं रही है। वह माता–पिता से बहुत दूर अकेली रहती है, क्योंकि वह

अति कुशलता के साथ सभी क्षेत्र में पुरुष के समान यथा उससे बडकर प्रतियोगीताओं में नंबर लाती है। देश–विदेशभ्रमण अकेले ही करती है। आज न उनमें डर है न झिझक, वह अति सम्मानित ढगं से जीवन यापन करती है। इसलिए भी वह अकेले रहना चाहती है। समय के साथ–साथ उपन्यासों में भी सामाजिक मूल्यबोध में परिवर्तन आया है। अतः साठोत्तरी महिला लेखिकाओं ने अपने उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तनों को बहुत ही कुशलता के साथ दर्शाया है। अतः हम कह सकते है की, साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों के उपन्यास में सामाजिक मूल्य परिवर्तन हुआ है, और महिला लेखिकाओं ने उसे बहुत ही सुंदर रुप से अपनी लेखनी की जरीए हमारे सामने प्रस्तुत किये है और आगे भी करते रहेंगे।

संदर्भ

1. हिंदी शब्द सागर – सं. श्यामसुंदरदास, दसवाँ भाग.
2. हिंदी उपन्यास : सामाजिक चेतना – डॉ. कुँवरपाल सिंह.
3. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य और ग्राम जीवन – डॉ. विवेकी राय.
4. आत्मने पद अज्ञये .
5. स्वामी : मन्नू भंडारी, दिल्ली.
6. समर्पण का सुख – गोपनीय, मोत की दिल्ली.
7. अपनी – अपनी यात्रा – कुसुम अंसल, दिल्ली.

डॉ. अरजण वी. नंदाणीया
एम.ए., पीएच.डी.
श्री वी. एम. महेता म्युनि. आर्टस एवं कॉमर्स कॉलेज जामनगर (गुजरात)